11

मसीह की दुल्हन

''... इसलिए कि मैंने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कुंवारी की नाईं मसीह को सौंप दूं'' (2 कुरिन्थियों 11:2)।

अमेरिका के हार्डिंग विश्वविद्यालय में कुछ छात्राएं मज़ाक में कहती हैं, ''जानते हो परमेश्वर ने आदमी को पहले क्यों बनाया? क्योंकि अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना बनाने से पहले वह एक रेखाचित्र बनाना चाहता था!'' मज़ाक की बात अलग है, परन्तु परमेश्वर के नमूने के अनुसार, स्त्री एक सुन्दर प्राणी ही नहीं बल्कि परमेश्वर की सम्पूर्ण सृष्टि में सबसे सुन्दर है।

एक स्त्री की सुन्दरता अपने विवाह के दिन सबसे अधिक होती है। कोई भी पति अपनी दुल्हन की सुन्दरता के उस दिन को नहीं भूलता जिस दिन वह विवाह के समारोह में अपना दिल और जीवन उसे सौंपने के लिए आई थी। उस क्षण की उसकी सुन्दरता तब तक उसके मन में रहेगी जब तक बुढ़ापे से उसकी स्मरण शक्ति खत्म न हो जाए या मृत्यु उसे उठा न ले।

कलीसिया के चित्रण के लिए ''दुल्हन'' शब्द के आकर्षण और भावना को हमारे मन से निकालना बहुत कठिन है। शायद यह कलीसिया के लिए नये नियम के सभी चित्रणों में सबसे अधिक सजीव है।

इस शब्द का इस्तेमाल कलीसिया के वर्णन के रूप में केवल यूहन्ना ने ही किया है। उसने शब्द के इस्तेमाल में कलीसिया की सांसारिक और स्वर्गीय स्थितियों को आपस में मिला दिया था (प्रकाशितवाक्य 21:2, 9; 22:17)। परन्तु 2 कुरिन्थियों 11:2 में पौलुस की तरह यीशु ने मरकुस 2:19 में कलीसिया का हवाला दुल्हन के रूप में दिया था। पौलुस द्वारा इफिसियों 5:22-23 में की गई तुलना और रोमियों 7:1-4 में उसकी एकरूपता में ऐसे अन्य हवाले शामिल हैं।

कलीसिया पर मसीह की दुल्हन के रूप में विचार करने से हमारे मन में इसके स्वभाव तथा चरित्र का एक और विचार आता है। कलीसिया को जो होना चाहिए उसे समझने के लिए, हमें सभी शब्दों, चित्रों तथा रूपकों को जांच-परखकर नाप तोल लेना चाहिए जिनका इस्तेमाल पवित्र आत्मा ने इसके वर्णन के लिए किया है।

कलीसिया पर लागू करने पर दुल्हन के इस रूपक से क्या सुझाव मिलता है ?

असंदिग्ध वफ़ादारी

पहले तो, ''दुल्हन'' शब्द में वफ़ादारी का संकेत है। एक दुल्हन ने प्रतिज्ञा की होती है; अर्थात उसने एक ऐसी वाचा बांधी है जिसके लिए प्रेम, वफ़ादारी और जीवन आवश्यक है।

पौलुस को यह डर था कि कुरिन्थुस के लोग सच्चे मसीह की ओर से किसी झूठे यीशु और झूठे सुसमाचार की ओर फिर रहे थे। इस कारण, उसने कुरिन्थुस के उन लोगों को मसीह में बने रहने और अपने आपको शुद्ध रखने का आग्रह करने के लिए हर सम्भव कठोर भाषा का इस्तेमाल किया था: ''क्योंकि मैं तुम्हारे विषय में ईश्वरीय धुन लगाए रहता हूं, इसलिए कि मैंने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कुंवारी की नाईं मसीह को सौंप दूं'' (2 कुरिन्थियों 11:2)। एक दुल्हन के लिए अपने पति को धोखा देने की बात सोचना भी असम्भव है, अत: पौलुस ने उस निष्ठा को समझाने के लिए जो एक मसीही की मसीह के प्रति होनी चाहिए, सगाई के सम्बन्ध का इस्तेमाल किया।

पति और पत्नी के मेल से अधिक निष्ठा का दूसरा क्या उदाहरण दिया जा सकता था? हम में से कइयों ने ऐसे पतियों और पत्नियों के बारे में सुना होगा जिन्होंने एक दूसरे से अलग होकर मरने के बजाय इकट्ठे मृत्यु का सामना करना चुना था। उनके मनों में एक दूसरे के प्रति समर्पण अकेले जीवित रहने से कहीं अधिक था।

कलीसिया के लिए सबसे आवश्यक बात मसीह की वफ़ादारी है। उसके लोगों को सफल होने, उन्नति करने या यहां तक कि जीवन का भी इतना महत्व नहीं है जितना मसीह के प्रति निष्ठावान होने का (प्रकाशितवाक्य 2:10)। हमें चाहिए कि हम अपने किसी भी सम्बन्ध (लूका 14:26), सम्पत्ति (लूका 14:33) या निष्ठा (लूका 14:27) से अधिक मसीह के प्रति वचनबद्धता को प्राथमिकता दें।

विलक्षण पहचान

दूसरा, कलीसिया के मसीह की दुल्हन होने की बात से पहचान का पता चलता है। हम उन लोगों का एक समूह हैं जिन्होंने अपने प्रेम को संकुचित कर लिया है और मन की इस एकता से मसीह के साथ एक वाचा बांधी है। इस कारण हम मसीह के हैं और मसीह हमारा है, जिस प्रकार से एक पति और पत्नी का एक दूसरे से सम्बन्ध होता है। हम मसीह को अपने सिर के रूप में देखते हैं और उसका नाम पहनते अर्थात अपनाते हैं, और वह हमें पृथ्वी पर अपनी देह मानता है और हमें अपनी कलीसिया कहता है।

पति और पत्नी दोनों के लिए ही विवाह का अर्थ एक नई पहचान होता है, परन्तु यह बात विशेष रूप से दुल्हन के लिए अधिक उपयुक्त होती है, क्योंकि विवाह के जीवन भर के लिए अनुबंध (इकरारनामे) से, उसे एक नया नाम अर्थात उसके पति का नाम मिलता है। इसी प्रकार, कलीसिया में प्रवेश करने पर और ''मसीह की कलीसियाओं'' (रोमियों 16:16)

का भाग बनने पर, हमें एक नई पहचान मिलती है जो मसीह के साथ हमारे मेल से उत्पन्न होती है।

परमेश्वर ने विवाह का प्रबंध इस तरह किया है कि पति और पत्नी दोनों एक हो जाएं: ''इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक ही तन बने रहेंगे'' (उत्पत्ति 2:24)। इसी प्रकार, मन परिवर्तन से, हम मसीह के साथ एक होते हैं (रोमियों 6:3)। यह एकता इतनी गहरी है कि इसे विवाह में पति और पत्नी के मिलन से अच्छी तरह समझाया जाता है: ''इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे, ... जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है। इसलिए कि हम उसकी देह के अंग हैं'' (इफिसियों 5:28-30)।

मसीही बनने के अतिरिक्त, एक व्यक्ति जो प्रमुख प्रतिज्ञाएं करता है, विवाह उनमें सबसे प्रथम होगा। विवाह का सम्बन्ध इतने असामान्य ढंग से महत्वपूर्ण है कि जो इसमें प्रवेश करता है उसके लिए एक अलग व्यक्ति बनना आवश्यक है। विवाह से पूर्व वह *एक* था, परन्तु विवाह के बाद से वह *किसी दूसरे का* हो जाता है। इसी प्रकार, नये नियम की कलीसिया में प्रवेश करने पर, हम मसीह की देह बन जाते हैं। अब हम वह नहीं रहे जो पहले थे अर्थात हम *मसीही* बन चुके हैं, हमारी पहचान मसीह के साथ हमारे मेल से होती है।

अद्वितीय सम्बन्ध

तीसरा, दुल्हन दूल्हे के साथ एक विशेष, कभी न समाप्त होने वाला वचन देती है। पृथ्वी पर दूल्हा-दुल्हन जैसा कोई और सम्बन्ध नहीं मिलता है।

इफिसियों 5:22-23 में पौलुस ने पति और पत्नी के सम्बन्ध में विस्तृत तुलना करते हुए मसीह से कलीसिया के बंधन को समझाया है। उसके उदाहरण में मसीही विवाह में पति और पत्नी को दी गई परमेश्वर की भूमिकाओं को स्पष्ट किया गया है, परन्तु उसका मुख्य केन्द्र-बिन्दु वह सम्बन्ध है जो मसीह और कलीसिया में पाया जाता है (इफिसियों 5:32)।

अपनी तुलना में, आत्मा की प्रेरणा से पौलुस ने समर्पण पर अधिक ज़ोर दिया है। मसीह की दुल्हन के रूप में कलीसिया मसीह को अपना सिर मानकर उसके आगे समर्पण करती है। उसने कहा है, ''हे पत्नियो, अपने अपने पति के ऐसे आधीन रहो, जैसे प्रभु के। क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्त्ता है'' (इफिसियों 5:22, 23)। जिस प्रकार एक पत्नी अपने पति के प्रति समर्पित होती है वैसे ही कलीसिया अपने अगुवे के रूप में मसीह की ओर देखती है।

किसी ने कहा है, ''यदि तानाशाह हर काम में सक्षम हो, तो सबसे योग्य सरकार तानाशाही की है।'' कलीसिया मसीह के आगे अपने आपको समर्पित करती है जो हर बात में समर्थ है और इस कारण वह उसकी सम्पूर्ण अगुआई का आनन्द लेती है। कलीसिया अपने अधिकार के लिए किसी मनुष्य की ओर, मनुष्यों के बनाए किसी संगठन की ओर, या इस पृथ्वी पर किसी मुख्यालय की ओर नहीं देखती। मसीह की सच्ची कलीसिया का सिर केवल एक ही है अर्थात मसीह जो प्रभु है।

किसी बाइबल क्लास में, इफिसियों 5:22-23 की चर्चा करते हुए मैं इस बात का उल्लेख अवश्य करता हूं कि इसकी आयत 23 पति के लिए नहीं बल्कि पत्नी के लिए है और आयत 25 पत्नी के लिए नहीं बल्कि पति के लिए है। पत्नी के लिए शब्द ''समर्पण'' है और पति के लिए ''बलिदान।'' पौलुस के अनुसार एक अच्छे पति में कम से कम ये दो गुण होने ज़रूरी हैं: (1) वह अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करता हो जैसे मसीह ने कलीसिया से किया अर्थात वह उसके लिए मरने को भी तैयार हो, और (2) वह उसकी आत्मिक अगुआई के लिए उच्चतम गुण उपलब्ध कराने की इच्छा करे। पौलुस के अनुसार, इसी प्रकार एक अच्छी पत्नी में भी कम से कम दो गुण होने आवश्यक हैं: (1) वह अपने सिर के रूप में अपने पति को समर्पित हो, और (2) वह उससे वैसे ही प्रेम करे जैसे कलीसिया को मसीह से करना चाहिए।

उसकी कलीसिया में प्रवेश करने और उसमें रहे बिना कोई भी मसीह के साथ इस विशेष दुल्हन/दूल्हा के सम्बन्ध में नहीं आ सकता। जिस प्रकार एक आदमी की पत्नी के रूप में किसी दूसरी स्त्री को वही विशेषाधिकार नहीं दिए जा सकते, उसी प्रकार किसी दूसरे संगठन या संस्था को, चाहे वह कितना भी प्रसिद्ध या सेवा के लिए समर्पित हो, मसीह के साथ दुल्हन/दूल्हा के सम्बन्ध का विशेषाधिकार नहीं मिल सकता।

असीमित पूर्वप्रबन्ध

चौथा, मसीह की दुल्हन होने का अर्थ है मसीह की सम्भाल और प्रेम का पूर्वप्रबन्ध पाना। राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु की दुल्हन को मिलने वाली आशिषों को पूरी तरह से कौन समझ सकता है?

पहले तो, यीशु अपनी कलीसिया के लिए *उद्धार* उपलब्ध कराता है। पौलुस ने मसीह को ''देह का उद्धारकर्त्ता'' (इफिसियों 5:23) कहा है। अपनी कलीसिया को यह जीवन उसने इसके लिए अपने प्राण देकर दिया: ''... जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया'' (इफिसियों 5:25)। फिर, यीशु कलीसिया को *सहारा* देता है। पौलुस ने कहा कि एक पति को अपनी पत्नी का पोषण वैसे ही करना चाहिए ''जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है'' (इफिसियों 5:29)। यीशु कलीसिया की *पवित्रता* की चौकसी करता और उसका भविष्य *सुरक्षित* करता है: ''कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर के पवित्र बनाए। और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, बरन पवित्र और निर्दोष हो'' (इफिसियों 5:26, 27)।

सिन्ड्रेला की मनोरम कहानी बच्चों (और वयस्कों) को अच्छी लगती है। हम इस विचार से प्रफुल्लित होते हैं कि एक गुलाम लड़की का जिसके साथ दुर्व्यवहार होता था अन्ततः एक राजकुमार के साथ विवाह हो जाता है। आइए कहानी के बाद वाले भाग पर विचार करते हैं। ''कहानी के बाद'' क्या हुआ? राजकुमार की पत्नी के रूप में सिंड्रेला के लिए जीवन कैसा था? उसके लिए उस जीवन का अनुभव कैसा था! पहले निर्धनता में रहकर, गुलामी में काम करने वाली निराश लड़की को, विलासिता, धन, समर्थन और अपने

नये घर और जीवन में एक उज्जवल भविष्य मिल गया था। राजकुमार से उसके विवाह के कारण उसे एक नई पहचान, एक नया जीवन और बहुत से आनन्द मिल गए थे।

मसीह की देह में प्रवेश करने से हमें मसीह की सम्भाल और पूर्व प्रबन्धों में लाया जाता है, जैसे दुल्हन अपने पति की प्रिय सम्भाल में आती है। मसीह की इस सुरक्षा की प्रतिज्ञा केवल कलीसिया के लिए है।

अनुपम प्रतिज्ञा

पांचवां, मसीह की दुल्हन के रूप में, कलीसिया का भविष्य वही होगा जो मसीह का है। कलीसिया वहीं जाएगी जहां मसीह जाता है, उसे वही कुछ मिलेगा जो मसीह को मिलता है और वह मसीह के साथ ही अनन्तकाल में रहेगी।

कलीसिया के सम्बन्ध में नये नियम में ''दुल्हन'' शब्द का विशेष प्रयोग प्रकाशितवाक्य 21 और 22 अध्याय में मिलता है। यूहन्ना ने इस शब्द का इस्तेमाल कलीसिया के भविष्य के साथ इसके स्वभाव को जोड़ने के लिए किया था। उसने पहले ''पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिए सिंगार किए हो'' (प्रकाशितवाक्य 21:2)। बाद में, एक स्वर्गदूत ने यूहन्ना से कहा था, ''इधर आ: मैं तुझे दुल्हिन अर्थात मेम्ने की पत्नी दिखाऊंगा (प्रकाशितवाक्य 21:9)। फिर उसे आत्मा में, एक बड़े और ऊंचे पहाड़ पर ले जाकर ''पवित्र नगर यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते दिखाया'' गया जिसमें ''परमेश्वर की महिमा ... थी, ...'' (प्रकाशितवाक्य 21:10, 11)। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक आत्मा और दुल्हन के निमन्त्रण के साथ समाप्त होती है: ''और आत्मा, और दुल्हिन दोनों कहती हैं, आ; और सुनने वाला भी कहे, कि आ; और जो प्यासा हो, वह आए, और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंतमेंत ले'' (प्रकाशितवाक्य 22:17)।

आत्मा के अनुसार, कलीसिया को इसके पृथ्वी पर मसीह की मंगेतर के रूप में और स्वर्ग में मसीह की पत्नी के रूप में देखा जाना चाहिए। यह बात 2 कुरिन्थियों 11:2 में वफ़ादार रहने की पौलुस की शिक्षा के अनुकूल है: ''क्योंकि मैं तुम्हारे विषय में ईश्वरीय धुन लगाए रहता हूं , इसलिए कि मैंने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कुंवारी की नाईं मसीह को सौंप दूं।''

सगाई का पूरा होना ही वास्तविक विवाह है। यूहन्ना ने एक नये यरूशलेम अर्थात पवित्र नगरी को अपने पति के लिए दुल्हन के रूप में सजी स्वर्ग से उतरने का दर्शन देखा था; और उसने इस दर्शन का अर्थ कलीसिया के सगाई से विवाह में जाने को बताया था। यह चित्रण कलीसिया के स्वभाव से मेल खाता है, जो कलीसिया के भविष्य के साथ ''दुल्हन'' शब्द से चिह्नित किया जाता है, जिसे स्वर्गीय नगर के मेम्ने की पत्नी के रूप में नीचे उतरने के रूप में चित्रित किया जाता है।

यीशु ने किसी और संस्था की नहीं बल्कि अपनी देह अर्थात अपनी कलीसिया का उद्धार करने की प्रतिज्ञा की है (इफिसियों 5:23)। उसकी कलीसिया का भविष्य

प्रकाशितवाक्य में पिछले समय में की गई प्रतिज्ञा के पूरा होने में और बुराई पर विजय के रूप में दिखाया जाता है। यदि आप उस अनन्त नगर की खोज में हैं, तो पवित्र बाइबल आपको उसकी कलीसिया में मसीह के साथ वफ़ादारी के अलावा इसकी खोज में भी अगुआई करती है।

बेदाग़ सुन्दरता

छठा, ''दुल्हन'' शब्द में सुन्दरता का सुझाव मिलता है। एक दुल्हन से सुन्दर कुछ और नहीं हो सकता। उसकी मनोहरता और वेशभूषा लोक-प्रसिद्ध हैं।

यूहन्ना ने लिखा है, ''फिर मैंने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हन के समान थी, *जो अपने पति के लिए सिंगार किए हो*''(प्रकाशितवाक्य 21:2)। प्रभु की आशिषों के बारे में लिखते हुए, यशायाह ने उदाहरण के लिए एक दुल्हन के आकर्षण का इस्तेमाल किया: ''मैं यहोवा के कारण अति आनन्दित होऊंगा, मेरा प्राण परमेश्वर के कारण मगन रहेगा; क्योंकि उसने मुझे उद्धार के वस्त्र पहिनाए, और धर्म की चादर ऐसे ओढ़ा दी है जैसे दूल्हा फूलों की माला से अपने आपको सजाता और दुल्हन अपने गहनों से अपना सिंगार करती है'' (यशायाह 61:10)। उसने परमेश्वर के विश्वासी लोगों की तुलना एक अतिसुन्दर दुल्हन से भी की: ''... और, जैसे दूल्हा अपनी दुल्हन के कारण हर्षित होता है, वैसे ही तेरा परमेश्वर तेरे कारण हर्षित होगा'' (यशायाह 62:5)।

अमेरिका में बहुत से दंपतियों में यह रिवाज है कि वे दूल्हे को दुल्हन के विवाह की ड्रेस तब तक नहीं देखने देते जब तक वह विवाह के समारोह में पहनकर नहीं आती। इस रस्म के बाद, दुल्हन सचमुच ''अपने पति के लिए सजती'' है। इस लिबास में पहली बार देखने पर दूल्हे को वह अति सुन्दर लगती है।

कलीसिया, अर्थात मसीह की दुल्हन को धार्मिकता के लिबास से और पवित्रता के विवाह के ड्रेस से सजाया जाता है। पौलुस ने लिखा है, ''और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, बरन पवित्र और निर्दोष हो''(इफिसियों 5:27)।

यदि कलीसिया मसीह को सुन्दर लगेगी तो यह संसार को भी सुन्दर लगेगी। यह एक ठप्पे की तरह है ''आप अपने चरित्र की सम्भाल कीजिए और आपका चरित्र आपकी प्रतिष्ठा की सम्भाल करेगा।'' जब कलीसिया मसीह के वचन के द्वारा शुद्ध रहती है और इस प्रकार उसे सुन्दर लगती है, तो संसार में इसकी प्रतिष्ठा वैसे ही होगी जैसे होनी चाहिए।

वचन में बने रहकर, अर्थात मसीह के प्रति वफ़ादार होकर कलीसिया अपने आपको स्वर्ग में मसीह के साथ विवाह के लिए सजाती है। हम अपने आपको उस बेदाग़ चरित्र और परमेश्वर के सामने निर्दोष आत्मा को बनाए रखकर उस विशेष दिन के लिए तैयारी करते हैं।

सारांश

अपने पति के लिए सजी दुल्हन से सुन्दर और क्या होता है ? सुन्दरता, पवित्रता और वफ़ादार रहने के संदेश, ''दुल्हन'' शब्द में ही मिलते हैं। यह आसानी से समझ आ जाता है कि पवित्र आत्मा ने कलीसिया के स्वभाव को व्यक्त करने के लिए इस व्यक्तित्व को क्यों चुना। इस शब्द में, हमें उस विशेष सम्बन्ध का पता चलता है जो कलीसिया मसीह से बनाए रखती है अर्थात मसीह के प्रति कलीसिया की वफ़ादारी, कलीसिया के लिए मसीह के पूर्वप्रबन्ध, कलीसिया की पहचान जो मसीह उसे देता है, और कलीसिया के लिए मसीह द्वारा बनाया गया इसका भविष्य। इस चित्र से मन में मसीही होने के कारण मिलने वाले लाभों, आकांक्षाओं, हमारे दायित्वों और अवसरों का ध्यान आता है। इससे हमारे मनों में मसीह के पास कलीसिया के सुन्दर और महिमायुक्त स्थान का ध्यान आ जाता है।

क्योंकि कलीसिया मसीह की दुल्हन है, इसलिए कौन उसकी कलीसिया का सदस्य नहीं होना चाहेगा ? मसीह की दुल्हन होना कितने सौभाग्य की बात है ! जो कोई मसीह की देह में प्रवेश नहीं करता और मसीह के अनुयायी के रूप में जीवन नहीं बिताता निश्चय ही उसने कलीसिया के स्वभाव को नहीं समझा है।

मान लीजिए कि कोई आपको बहुत बड़ा ख़ज़ाना पेश करता है जिसे आप अपनी इच्छा से खर्च कर सकते हैं। क्या आप इसे स्वीकार कर लेंगे ? क्या आप किसी के *रीडर'स डाइजेस्ट* की एक करोड़ डॉलर की स्वीपस्टेक (जुआ) इन्कार करने की कल्पना कर सकते हैं ? यदि वह धन आपको मिल जाए तो क्या आप उससे मुंह मोड़ लेंगे ? या आप कहेंगे, ''एक करोड़ डॉलर, ओह ? क्षमा करना, मुझे इसमें बिल्कुल दिलचस्पी नहीं है'' ? उत्तर स्पष्ट है। आप उस धन को पाकर खुशी से फूले नहीं समाएंगे।

उसकी कलीसिया में प्रवेश और उसकी दुल्हन के रूप में रहने का आपको मसीह का निमन्त्रण पृथ्वी के सारे धन और आनन्द तथा वैभव से बढ़कर है। यह आपको यीशु के साथ उस अनन्त सम्बन्ध में प्रवेश का निमन्त्रण देती है जिससे आपको यहां और अनन्तकाल में इतनी उदारता से आशिषें मिलेंगी जो हमारी वर्तमान समझ से बाहर हैं।

''पतरस ने उन से कहा, 'मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।' ... और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रति दिन उन में मिला देता था'' (प्रेरितों 2:38, 47)।

अध्ययन एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. एक दुल्हन की विशेषताएं बताएं।
2. नये नियम का कौन सा लेखक कलीसिया को विशेष तौर पर ''मसीह की दुल्हन'' कहता है ?
3. मसीह के प्रति वफ़ादार होने का क्या अर्थ है ?
4. क्या विवाह से हमारी पहचान में कोई अन्तर पड़ता है ?
5. क्या आप विवाह को सबसे बड़ी प्रतिज्ञाओं में से एक कहेंगे ?
6. ''समर्पण'' शब्द का क्या अर्थ है ?
7. ''यदि तानाशाह सब कुछ करने में सक्षम हो तो सबसे योग्य सरकार तानाशाही की है।'' कथन पर चर्चा करें। इस वाक्य का मसीह से क्या सम्बन्ध है ?
8. इफिसियों 5:22-33 के अनुसार एक पति को अपनी पत्नी से कैसा प्रेम रखना चाहिए ?
9. मसीह अपनी कलीसिया के लिए क्या उपलब्ध कराता है ?
10. मसीह की कलीसिया का भविष्य कैसा है ? इस भविष्य का अपने शब्दों में वर्णन करें।
11. कलीसिया को ''मसीह की दुल्हन'' के रूप में विचार करते हुए आपके मन में कौन सी मुख्य विशेषताएं आती हैं ?
12. क्या मसीह ने अपनी कलीसिया के उद्धार की प्रतिज्ञा की है ? क्या उसने किसी अन्य कलीसिया के उद्धार की प्रतिज्ञा की है ?